॥ श्रीः ॥

दीपप्रकाश।

श्रीयुत महाराज उदितनारायणसिंह जी काशीनरेश के प्रीत्यर्थ तदनुज श्रीदीपनारायणसिंहजी की आज्ञानुसार ब्रह्मदत्त कवि कृत

श्रीमन्महाराजाधिराजाद्विजराजकाशीराज श्रीयुत १०८ प्रभुनारायणसिंह महोदय की आज्ञानुसार

काशीवासी बाबू जगन्नाथदास (रत्नाकर) द्वारा परिशोधित और प्रकाशित।

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ।

सम्वत् १९४६ माघ।

॥ श्रीः ॥

दीपप्रकाश ।

श्रीयुत महाराज उदितनारायणसिंह जी काशीनरेश के प्रीत्यर्थ तदनुज श्रीदीपनारायणसिंहजी की आज्ञानुसार ब्रह्मदत्त कवि कृत

श्रीमन्महाराजाधिराजाद्विजराजकाशीराज श्रीयुत १०८ प्रभुनारायणसिंह महोदय की आज्ञानुसार

काशीवासी बाबू जगन्नाथदास (रत्नाकर) द्वारा परिशोधित और प्रकाशित ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सम्बत् १९४६ माघ ।

निवेदन ।

पाठक महाशय !

यह ग्रन्थ भूतपूर्व श्रीयुत महाराज काशीराज उदितनारायणसिंहजी के अनुज श्रीदीपनारायणसिंहजी की आज्ञा से ब्रह्मदत्त कवि ने बनाया था। इनके जीवन चरित्र के विषय में तो कहीं कुछ लिखा नहीं मिलता इसी ग्रन्थ से यह प्रतीत होता है कि ये सम्वत् १८६७ के पहिले जखिनी नामक ग्राम (जो रामनगर से अग्निकोण में पांच कोस पर है) में उत्पन्न हुये थे और महाराजा उदितनारायणसिंहजी काशीनरेश के आश्रित थे । इसके अतिरिक्त वृद्धों के मुख से मैंने यह सुना है कि ये कवि जी अन्त में विरक्त हो गये और महाराज से कहकर काशीपञ्चगङ्गाघाट पर आन बैठे महाराज के यहां से कुछ सीधा मिलता था उसी से अपनी शरीरयात्रा करते हुये ईश्वर भजन में

सदा मगन रहा करते थे और जो कुछ बच जाता था साधु ब्राह्मणों को बाँट दिया करते थे इनके परमेश नामक एक पुत्र भी साथही रहा करते थे यह अच्छे कवि थे। इनके जानकी जी के वर्णन में आठ कवित्त मुझ को मिले हैं। ब्रह्म कवि कुछ संस्कृत भी जानते थे यह बात इस ग्रन्थ के अन्तिम श्लोक से प्रतीत होती हैं।

यह पुस्तक रद्दी में मुझ को मिली थी। आवेदन करतेही सर्वविद्याविनोदी गुणागार श्रीमन्महाराजाधिराजद्विजराज काशिराज श्री-१०८ युत प्रभुनारायणसिंहजी महोदय ने अपने नैसर्गिक विद्यावृद्धि-विषयक उत्साह से मुद्रित कराने को आज्ञा दे दी। क्यों न हो 'विद्वानेवहि जानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्' हमारे महाराज विद्वान् हैं संस्कृत में सुललित कविता करते हैं फिर ग्रन्थकार के परिश्रम को क्यों न समझें। उनके अतिरिक्त जिन लोगों ने विद्या का गन्ध तक न जाना और जोर ाज्यसिंहासन

को केवल ऐन्द्रिय तुच्छ सुखों के साधनार्थही समझे हुये मस्त हैं इस बात को क्या जानें ?।

श्रीमान् की आज्ञा से मैंने यथा मति शोधन कर यथारीति मुद्रित कराया है आशा है कि 'भाषाभूषण' की न्यूनता को यह ग्रन्थ पूरा करेगा।

इस पुस्तक के सर्वथा अधिकारी श्रीयुत महाराज काशीनरेशही हैं अतएव मैं इसे उन्हीं के चरणकमलों में अर्पित करता हूं और ईश्वर से सदा यही चाहता हूं कि जिनके सिंहासनारूढ़ होतेही अनेक ग्रन्थों का जीर्णोद्धार हुआ उन साम्प्रतिक भोज श्रीयुत काशीश्वर की विद्यारसिकता सदा बढ़ती रहै जिस्से संस्कृत और प्राकृत के लुप्तप्राय विषयों का पुनरुज्जीवन हो।

श्रीमान् का नितान्तानुगृहीत
जगन्नाथदास (रत्नाकर)
शिवालाघाट—बनारस।

दीपप्रकाश।

श्रीगणेशायनमः।

मङ्गलाचरण।

सवैया।

सेंदुर सों भरो सोहै भुसुण्ड उदैगिरि पै मनो भान उदै को। दन्त लसै मनो द्वैज को चन्द विचार कै आयो है मित्र मिलै को॥ चन्दनलीक लौं चन्दकला सिर चारि भुजा अहै दानि अभै को। कैसे कलेश को लेश रहै मन आनत रूप महेशतनै को॥ १॥

प्रभुवंशवर्णन—दोहा।

गौतम के कुलमें भये महाराज बरिवण्ड।
जाहिर जम्बूद्वीप में जाको तेज प्रचण्ड॥ २॥

सवैया।

श्रीबरिवण्ड महीपति सों जुरि जंगमें कौन करी बरजोरी। लूटि लियो दल कीचकवेग को

आगा कुली को कुली (१) भिरि तोरी॥ दीन्हो मरातिब माही कहै कवि ब्रह्म महा महिपाल निहोरी। छानबे के नृप दण्ड (२) दिये किये थान बिजैगढ़ और अगोरी ॥ ३ ॥

दोहा।

नृपति महीपनरायणाहु ताको सुत कानीन (३)
सपने हूं अपने हिये अरि को भय आनी न ॥४॥

सवैया।

भाल बिशाल सुभाग को शाली मनोबच काली के प्रेम परायन । बुद्धि बिचार अगार उदार सुसीलमैं संयुत सूधे सुभायन ॥ कञ्ज से नैन कलानिधि सो मुख बाहु प्रलम्ब करी कमलायन । पायन पूजे किते पुहमीप भये कुलदीप महीपनरायन ॥ ५ ॥

दोहा।

तीन तनय तिनके बिदित उदितनरायन जेठ।
दाता ज्ञाता सूरमन जिन कीन्हों हठिहेठ ॥६॥

(१) कूल्हा कमर। (२) कर·ख़राज।

(३) सुत-कानीन—पुत्री के पुत्र, अर्थात् दौहित्र।

कबित्त ।

तत्त्वणहीं ढरिबो बिचच्छा बिलोकि कीबो लच्छन की मौज प्रतिपच्छन पछारिबो । कहै कबि ब्रह्म ज्यों अमर-सरित कैसो उज्जल सुयस जगती में बिसतारिबो ॥ चोप सों चरित भगवन्त को निहारिबो औ भारी भूमि भार भुज दण्डनि संभारिबो । महाराज उदित नरेस के ये काज गजराजन को दीबो मृगराजन को मारिबो ॥ ७ ॥

सोदर सरिस लम्बोदर को बिलोकियत भुजनि में विजय बिभूति देस देस की । जाकी बानि जनमनरञ्जनि सदाहीं करतूति कर-कञ्जनि बसत अलकेस की ॥ शील सुघराई कैसी ब्रह्म पै बखानी जाय सिफत करे को चाहियत मति सेस की । मुख शोभा देखि सरमिन्दा होत ससी लसी इन्द्र कैसी नजर नरिन्द उदितेस की ॥ ८ ॥

दोहा।

दीपनरायण दूसरो सुमति सुशील उदार ।
नेह निरन्तर नृपति सों देह धरे जनुमार ॥९॥

कवित्त।

भुजनि की छांह सों निबाहत विबुध वृन्द सुवचन सुमन समूह बरषत है। कर पल्लवनि फल इच्छित फलत सदा निज दल विपुल बिलोकि हरषत है ॥ सोर सुनि आवैं चहुंओर ते दरिद्री ब्रह्म जाचक के जूहन को रोरन रषत है। इन्द्रलों लसत ओज उदित नरिन्द्र जहां दीपनारायन दूजो देव-दरषत(१) है ॥ १० ॥

दोहा।

जगत प्रसिद्ध प्रसिद्ध नारायण नाम कनिष्ठ ।
वृद्धन की सी लसति है जाकी बुद्धि बरिष्ठ॥११॥

सवैया।

शील समूह बसै दृग में कवि कोविद जूह भये गुण गायन। सेवक की सुनतै हरै पीर धरै

(१) देवदरषत—कल्पद्रुम।

उर धीर गँभीर सुभायन ॥ ब्रह्म भनै काहूं छोड़ै
न ऐंड़ कुपैंड़ में भूलेंहु देत न पायन । देखत
होत मनोरथ सिद्ध दुनी में प्रसिद्ध प्रसिद्धन-
रायन ॥ १२ ॥

ग्रन्थकारण—दोहा ।

दीपनरायनसिंह को लहि आयसु कवि ब्रह्म ।
कविकुलकण्ठाभरण लगि कीन्हो ग्रन्थ अरम्भ ॥

कविदेशग्राम ।

बरन्यो भीषम देवहीं बिबिध भांति निज बंस ।
तातें मैं तिनको कछू कीन्ही नहीं प्रसंस ॥१४॥
काशी के दच्छिण दिशा पुरी यच्छिणी(१)नाम ।
बिप्र बृन्द बहु बसत तहँ ब्रह्मदत्त को धाम १५

इति श्रीमन्महाराजद्विजराजकाशिराज उदितनारायण-नरेन्द्रानुज-देवद्रुमावतार श्रीदीपनारायणसिंहकृते कविब्रह्मदत्तकृते प्रथमः प्रकाशः ।

—❋❋❋—

दोहा ।

बरणत बिबिध प्रकार सों होत ग्रन्थ बिस्तार ।
समुझन लगि, साहित्य को कहत सुधा सम सार॥

(१) यच्छिणी—जखिनी ।

आलम्बन विभाव ।

नवरस में, शृंगार रस सरस कहै सब कोय ।
आलम्बन बिन नायिका नायक, कैसे होय ॥२॥

चतुर्विध नायक ।

सो नायक अनुकूल जेहिं एक नारि को नेम ।
सोदच्छिण जाको विदित बहुवनितन सों प्रेम ॥
करि अपराध अगाध सठ बोलत बचन मिठास ।
बहु प्रकार कीन्हे कलह, धृष्टहि त्रपा(१)न त्रास॥

त्रिविध नायक ।

निजपतिनी को रसिकपति, उपपति परतिय यार ।
वैशिक नायक कहत जेहिं बारबधुन पै प्यार ॥५॥

त्रिविध नायिका ।

सुकिया निजपति को चहै परकीया पर कन्त ।
गणिका तासों कहत हैं जेहिँ भावत धनवन्त॥६॥

जाति भेद ।

शशा,(२)वृषभ, मृग अश्व, ये पुरुषौ चारि प्रकार ।
पद्मिनि, चित्रिणि, शङ्खिनी, हस्तिनि इनकी दार(३)

(१)त्रपा—लज्जा (२)शशा—खरगोश (३)दार—दारा, पत्नी ।

पद्मिनी ।

अलप असन, उज्जल बसन, हँसनि मन्द, मृदुगात ।
पद्मगंधयुत पद्मिनी भाषत मति अवदात ॥८॥

चित्रिणी ।

सूक्षम तन, चंचल नयन, बसन बिचित्र सोहाय ।
चञ्चरीक सम चपलचित चित्रिणि सहज सुभाय॥

शङ्खिनी ।

बक्र बोल, कुचगोल अरु बड़े बड़े दृग बार ।
शङ्खिनि के कर चरन लघु सहित खेद जल छार ॥

हस्तिनी ।

लघु लोचन, कुच पीन तन, जिनके उनये कन्ध ।
ताहि बदत बुध हस्तिनी, खेद ससिल गजगन्ध ॥

मुग्धादि भेद ।

मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा होतीं समयहिँ पाय ।
सुकिया, परकीया सहित सामान्या समुदाय ॥

(अज्ञातयौबना)

जान न जोबन आगमन वह अज्ञात गनाइ ।
रतिया ते छतिया, अरी छुई न जाइ दुखाइ ॥

(ज्ञातयौवना)

ज्ञातजोबना कहत जेहिं जोबन परै जनाइ ।
अञ्चल चञ्चल षिनहिं षिन राखति खयै दबाइ ॥

(नवोढ़ा)

ताहि नवोढा कहत हैं जेहि रति भावति नाहिं ।
भीतर जाति न भौन के भीत रहै मनमाहिं ॥

(मध्या)

मध्या तासों कहत जेहि लज्जा, मदन समान ।
लाल चहै नहिं लाज तें लालच है अंखियांन ॥

(प्रागल्भा)

ताहि प्रगल्भा कहत हैं जाकी रति पै चाह ।
रवि छवि छीन लखें खरी भरी अछेह उछाह॥१७॥

परकीयाभेद—(क्रियाविदग्धा)

करै क्रिया में चतुरई क्रियाविदग्धा बाम ।
पीठ दियेहू मुकुर में लख्यो सलोनो श्याम॥१८॥

(वाग्विदग्धा)

वाक्य-विदग्धा और सों कहै और के माथ ।
सास, माइके जाति अब तूं रहिहै मो साथ॥१९॥

(स्वयन्दूतिका)

स्वयं-दूतिका नायिका कहतसुकबि यहि रीति।
जाके पिय परदेस तेहि परदेसिन पर प्रीति॥२०॥

(लक्षिता)

कहत लक्षिता नायिका जाकी प्रीति लखाइ।
तिय तो कुचनखरेख नहिं राखत रतिहिं छपाइ॥

(गुप्ता)

गुप्ता रति गोपन करै जहँ कछु बात बनाइ।
अटुकी चढ़त करार पै हरि धरि लीन्ही धाइ॥

(कुलटा)

होतन कुलटाके हिये रति को रति(१)संतोस।
तरुन तरुनउपजे,अविधि कीन्ही बिधि बिनहोस॥

(मुदिता)

मुदिता तासों कहत जो मुदितमिलाप बिचारि।
श्यामसुरति मनमांझ धरि सांझ मनावति नारि॥

(अनुशयना)

सो अनुसयना मनदुखित बिनसो देखि सहेट।
न सकी उखरत ऊख लखि मसकी पेटहि-पेट॥

(१) रत्ती-तनकभी।

थान मिलै धौं नहि मिलै सोच करै वह औरि।
तू पछिताइ न हौं सुनी घनी बाग पियपौरि ॥
तीजी मीत सङ्केट में आप सकै नहिं जाय ।
अहै ! अहै !! बन ओर सुनि रहे नैन जल छाय॥

साधारण भेद—(प्रोषितपतिका)

प्रोषित-पतिका नयिका जाको पिय परदेस ।
कासों कहै अँदेस(१) अलि आयो नाहिं सँदेस ॥

(कलहान्तरिता)

कलहान्तरिता कलह करि पुनि पाछे पछिताय।
हाय गयो सरमाय हरि हौं न लियो हियलाय॥

(खण्डिता)

मन महँ खीसै खण्डिता सापराध पिय जानि।
अधरन अञ्जन देखि तिय मुकुर दिखायो आनि॥
धीरा जाहिर करति है व्यङ्ग बचन कहि कोप।
नँदनन्दन! निन्दत नयन आज कोकनद ओप ॥
करति अधीरा नायिका प्रगटहि कोप प्रकाश।
सोइ रहो मुंह गोइ नहिँ जाहु पियारी पास ॥

(१) अँदेस—अंदेशा (फारसी) सोंच, चिन्ता।

धीराधीरा कहति है कछु परगट कछु गोइ ।
दूरि कियो दुख दरस दै अब डारो मुंह धोइ(१)

(उत्कण्ठिता)

उत्कण्ठिता करै हिये पिय आवन लगि सोच ।
अजौं न आये श्याम घन मन कौन को संकोच॥

(अभिसारिका)

प्रीतम पै अभिसारिका आपुनिहीं चलि जाति ।
पहिरे सारी श्यामरंग त्यों अंधियारी राति ३५

(बिप्रलब्धा)

बिप्रलब्ध वह नायिका होइ न पिय सों भेंट ।
बालहिं दुख दूनो भयो सूनो देखि सहेट ॥३६॥

(बासकसज्जा)

बासकसज्जा नायिका पिय आगमन बिचारि ।
अङ्ग २ अभरन बसन बैठी सेज सँवारि ॥ ३७ ॥

(स्वाधीनपतिका)

तेहि स्वाधीन प्रिया कहैं जाको पिय आधीन ।
मृगनैनी बेनी गुही लै हरि कुसुम कलीन॥३८॥

(१) शृङ्गारमञ्जरीकार भी धीरादि को खण्डिता में अन्तर्भूत करता है ।

(प्रवत्स्यत्पतिका)

कहत प्रवत्स्यत्-प्रिया प्रिय गमन सुनै जो कान ।
पियको परिकर कार करत तियको मुखपियरान॥

(आगतपतिका)

पिय आये परदेस तें आगत-पतिका होति ।
अंगन में पिय हेरि तिय अंगन जागी जोति ॥

(गर्बिता)

गर्बित अपने रूप सों रूप-गर्विता नारि ।
बरबस बींधत यह मधुप मो मुख वनज बिचारि
गर्बित जो पिय प्रेम सों प्रेम-गर्विता बाम ।
मो ढिग रहत उमंग सों संग न छोड़त श्याम॥

(अन्यसम्भोगदु:खिता)

दुखित होय मन अन्य-सम्भोग-दु:खिता बाल ।
तू कत भई बिहाल जौं नहिं आये नदलाल ॥

मान ।

हांसीतें, अरु विनय तें, पाय परें मिटि जाय ।
लघु,मध्यम,गुरुमानतेहिं कहत सुकबि समुदाय

लघुमान।

काहू सों मुसक्यात लखि बैठी नार नवाइ।
हेरि हसौंहों पिय बदन मुसकानी समुहाइ ४५

मध्यममान।

भौंह तनैनी करि रही कही कछू नहिं गाथ।
जोरत हाथ निहारि जुरि गई नाथ के साथ॥

गुरुमान।

मान न छाड़ति मानिनी दूती रही मनाय।
आप मनाई नाह सिर छांह छुवाई पाय॥४७॥

इति श्रीमन्महाराजद्विजराजकाशिराज उदितनारायण-नरेन्द्रानुज-देवद्रुमावतार श्रीदीपनारायणसिंहकारिते कवि ब्रह्मदत्तकृते दीपप्रकाशे द्वितीयः प्रकाशः।

—***—

सात्विक भाव।

पुलक, पसीजन, कम्प, अरु अश्रुपात, स्वरभङ्ग।
बिबरणता, स्तम्भ, ऽरु प्रलय, आठो सात्विक अङ्ग॥

अनुभाव।

बङ्कबिलोकन, बचन, अरु सात्विक भावसमेत।
चुम्बन, आलिङ्गनहु, अनुभाव कहत करि हेत॥

नव रस नाम।

रस शृङ्गार, सुहास्य, अरु करुण, रौद्र, फिर बीर
भ्यानक, बीभत्साद्भुतहि, शान्तहि कहत सुधीर

स्थाई।

जेहि रस में जो थिर रहैं सोई स्थाई भाव।
बूझि भरतमत कहत हैं कबि कोबिद करिचाव
रति,सुहास्य,शोकहिं,कहत क्रोध, बहुरि उत्साह
भय, ग्लानि, आश्चर्य, निर्वेद सुनै सब पाह ॥५॥

द्विविध शृङ्गार।

इक संयोग बियोग पुनि बिबि प्रकार शृङ्गार।
सम्मत सबहीको समुझि सुकबि कह्यो निरधार॥
दम्पति जहँ एकत रमत तेहि भाषत संयोग।
बिलग भये पुनि दुहुन के बुधजन बदत बियोग॥

आलम्बन-उद्दीपन।

पिय, प्यारी बरनत जहां आलम्बन तहँ होत।
उद्दीपन तेहि कहत रस जासो होत उदोत॥

हाव।

दम्पति के संयोग में जैसो होत सुभाव।
ताही सी बुध बदत हैं दस प्रकार के हाव ॥८॥

पलट बिभूषण, बसन को करत सुलीला हाव ।
लाजन तें न कछू कहत बिहृत कहत करि चाव
सोबिलासचितवनि, चलनि, जहँबरणतबतरानि॥
अंग २ भूषण सजत ललित लेहु तहँ जानि ११
किलकिञ्चित अमरष, हरष, धरष जहां अभिलाष
दुख, सुख प्रगट करत तहां हाव कुट्टमित भाष
बिच्छित हाव कहैं जहां भूषण भावत थोर ।
विभ्रम बरणत तहँ जहाँ भूषण औरै ठौर॥१३॥
मोट्टाइत भाषत सुमति भये द्रस की चाह ।
वह विब्बोक करै नहीं आदर आये नाह ॥१४॥

सञ्चारी भाव ।

सब रस में सञ्चरत जो ते व्यभिचारी भाव ।
सम्मत सबही को समुझि वर्णि बतावत नाँव ॥
कहि निर्वेद, ग्लानि, पुनि शंका, ऽसूया, जानि
मद, श्रम, आलस, दीनता, चिन्ता, मोह, बखानि
स्मृति, धृति, लाज, बहोरि आवेग, चपलता, लेखि
जड़ता, हर्ष, ऽरु गर्व, कहि बहुरि बिषाद बिशेषि
निद्रा, ऽमरष, बहोरि कहि औत्सुक्या, ऽपस्मार ।
स्वप्न, बोध, उग्रता, स्मृति, व्याधि, अवहिथा कार ॥

कहिउन्मादहि,त्रासपुनि, बहुरि वितर्क विलास
संचारी तेंतीस ये कविजन करत प्रकास ॥१८॥

(लक्षण)

मनउदास लखि विषय सुख खेद भये निर्वेद ।
आधि व्याधि सम्भूत बल-हानि ग्लानि कहु वेद॥
शङ्क सुहातो वस्तुकी हानि डरहि को नाम ।
सुअसूया भल और की सहि न सकै बुध बाम॥
अति आनँद ते मोह जो तेहि मद कहत सुजान
जहँ उतालतातें सिथिल श्रम भाषत मतिमान॥
अँग ऐंड़ाइ न उठि सकै आलस कहत प्रवीन।
लीन होइ मन दु:ख में वहै कहावत दीन २३
चिन्ता भावत वस्तु को करत रहै जहँ ध्यान ।
चित्त बिकलता में मगन मोह वहै नहिं आन॥
सुधि करिबो प्रियवस्तुकी स्मृतिभाषत सब कोइ
तेहि सुमेध धृति कहत संतोष प्रगट जहँ होइ॥
लाजकहततेहिथलसुमति मन सकुचै जेहि ठौर
अनहोनी लखि चित्त भ्रम वह उन्माद न और
अति उतालता काज को तहां चपलता लेखि।
जड़ता जहँ सुख काम को शून्य होय सुविशेषि

तहां हर्ष भाषत हिये आनँद होय न खर्ब ।
सबही सों आपुहिं सरस गुनिबो जानहु गर्ब ॥
षीन होय मन दु:ख में तहां बिषाद बखानि ।
काम कछू नहिं करि सकै अँग सोइ निद्रा मानि
तहँ अमरष भाषत जहां क्रोध होय अधिकार ।
उत्सुकता जहँ कामको चित सहि सक न अबार
अपस्मार भ्रम विकलता मूर्छा जेहि थल होय ।
स्वप्न सोइबे को कहत जानत हैं सब कोय ॥
बोध जागिबे कों कहत जे जग में बुधिवन्त ।
समरथ निन्दन को सबहि कहत उग्रता सन्त ॥
प्राणबियोगहिकहतमृति;व्याधिरुजहिंजियजानि
अवहिथ परै न लाज तें हर्ष शोक पहिचानि ॥
चित्त भ्रम उन्माद को बुधजन कर निरधार ।
तेहिबितर्कभाषतसुमतिजेहिथलबिबिधबिचार॥
जेहि तें लहै शरीर सुख तेहिं बुध बदत बिलास ।
सञ्चारिन को अर्थ इमि सुकबिन कयो प्रकास ॥

शब्दालङ्कार ।

छेकानुप्रास ।

बीच राखि पद परत सम तहँ छेकानुप्रास ।
गरद दिखाति न शरदऋतु नरद मयङ्क प्रकास ॥

वृत्त्यनुप्रास ।

तहाँ वृत्त्यनुप्रास जहँ वर्ण बराबर देत ।
शारद बारद, पारदौ, नारद सो यस सेत॥३७॥

लाटानुप्रास ।

तहँ लाटानुप्रास जहँ पदहिं गहत पद अन्त ।
अन्त न लहति बसन्त को जौ नहिं आवत कन्त ॥

यमकानुप्रास ।

यमक जहाँ पद फिर वहै दूजो अर्थ बिचार ।
चलिये बलि घनश्याम पै तू घनश्याम नहारि ॥

कोमलावृत्ति ।

कहत कोमलावृत्ति जहँ वर्ण मिताई होति ।
चैत चन्द की चाँदनी तैसौ तिय मुख जोति ॥

परुषावृत्ति ।

परुषावृति तासों कहत जो सुनि सुखी न कान ।
धर्कस सहै न तेज तव कर्कस अर्क समान॥४१॥

इति श्रीमन्महाराजद्विजराजकाशीराज उदितनारायण-नरेन्द्रानुज-देवद्रुमावतार श्रीदीपनारायणसिंहकारिते कवि ब्रह्मदत्तकृते दीपप्रकाशे तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

—✻✻✻—

अथ अलङ्कार व० ।

दलन अमङ्गल अमित के सकल सुमङ्गल सद्म ।
छद्म छाड़ि सुमिरत सदा सीतापति पद पद्म ॥
शारदशशि-भा-रदकरनि शारद को उरआनि ।
बूझि भरत मत ब्रह्मकवि भूषन कहत बखानि
ताहि कहत उपमान कवि जाकी समता देत ।
जाको वर्णन करत हैं तेहि उपमेय सहित ॥३॥
उपमा अरु उपमेय में जो समता को हेत ।
ताहि धर्म सब कहत हैं जे जग सुमति सचेत॥
सो,ऐसो, लौं तुल्य ज्यों, जैसे, सरिस, समान ।
जिमि,इवआदिकहोतहैं बाचक बिबिध विधान
पूरण उपमा कहत तहँ जहां मिलत ये चार ।
जहां होत जो लुप्त तहँ लुप्तोपमा बिचार ॥६॥

उपमालङ्कार ।

शोभा सरिस दुहून में सो उपमालंकार ।
हरिकीरति सुरसरितलौं तिहुंपुर करति बिहार

(लुप्तोपमा)

बाचक लुप्ता कहत जहँ उपमा बाचक हीन ।
चषनचाहि गिरिउच्च कुच गिरधर होत अधीन

धर्मविलुप्ता कहत हैं होत धर्म को लोप ।
पाला सी लागति दृगनि गोपसुता की ओप ॥
कहत नहीं उपमान जहँ तहँ लुप्ता उपमान ।
सुन्दर नन्दकिशोर सो हौं न निहारयो आन † १०
वाचक धर्म विलुप्त तहँ जहँ ये दुहुं न उद्दोत ।
वा अहीरजाई लखी सौत रजाई होत ॥ ११ ॥
वाचक उपमा लुप्त तहँ ये द्वै जहां रहै न ।
हौं हारी हिय हेरि कोउ हरि की छबि को है न
कहत धर्म उपमा लुपत गोपित करि बुधि ऐन
हरि नीके लागत लखत हरिनी कैसे नैन १३
वाचक औ उपमेय बिन लुप्ता सुमति प्रकास ।
प्यारी के मुख तें कढ़त कोकिल बैन मिठास ॥
उपमा वाचक धर्म बिन लुप्ता को यों रूप ।
हरि को सरि को करि सकै समुझत हिये अनूप

अनन्वय ।

सु अनन्वय उपमान उपमेय तऊ इक ठौर ।
नागर नन्दकिशोर सो नागर नन्द किशोर १६

† उपमान लुप्ता के उदाहरण कोई २ कबि न जाने क्या समझ कर ऐसे लिखते हैं ।

उपमेयोपमा।

उपमेयोपम अलङ्कृति दुहुन परसपर होत।
इन्दु सरिस इन्दिरा मुख मुख सो इन्दु उदोत॥

प्रतीप—(पञ्चबिध)

उपमानहिं उपमेयता दीन्हे प्रथम प्रतीप।
सजनी सोहत आज को तो मुख सो रजनीप॥
बर्ण्य अनादर होत जहँ तहां प्रतीप द्वितीय।
तूं इतनो इतराति कत तोसी रति रमणीय॥
तीजो कहत प्रतीप सु अबर्ण्य अनादर ईठि।
गांसी तू न गरब करै तोसी नागरि डीठि २०
नहिं अबर्ण्य सरि बर्ण्य की लहै सुचौथो जान।
बिम्ब बषानि कह्यो सबनि तुव अधरा रसखान॥
उपमा को कछुकाज नहिं पंचवों कहत प्रबीन।
अञ्जन रञ्जित नैन लखि का खञ्जन का मीन॥

रूपकालङ्कार।

बिषई सों अरु बिषय सों भेद न तहां अभेद।
सरिस रूप तद्रूप यों रूपक के द्वै भेद॥ २३॥
अधिक, न्यून, समतीन ये पुनि दुहूनि में होत।
षट् प्रकार रूपक सरस भाषत हैं मतिपोत॥

गोप सुता यह बीजुरी जुरी श्याम घन संग ।
काहे करति न चन्द्रधर ये हर उरज उतंग २५
तेरो मुख अरविन्द अलि वृन्द चाहि सकुचै न ।
तिय तो बैन सुधा सुनत सुधा सवादि लहै न ॥
पूजे खञ्जन सों अपर दूजे खञ्जन नैन ।
काम अतन तें सौगुनों श्याम काम सुख दैन ॥

परिणाम ।

विषई अन्तर विषय के करत काम परिणाम ।
कर कञ्जनि तोरति सुमन चित चोरति वह बाम ॥

आक्षेप ।

सो आक्षेप जु प्रथम कहि बहुरि निषेधै ताहि ।
उनये नये निहारि घन कै घनश्यामहि चाहि ॥
तहँ दूजो आक्षेप जहँ होय निषेधाभास ।
हौं न मनावति मानिनी उन्हें दरस की प्यास ॥
तहँ आक्षेप तृतीय विधि प्रगट, ऽरु गुप्त निषेध ।
गौनहु कन्त बसन्त में कहिहैं सबै सुमेध ॥३१॥

बिरोधाभास ।

भासित होय बिरोध जहँ तहां बिरोधा भास ।
बास हरेहु रहति है तो अङ्गनि छवि बास ॥

बिभावना।

पहिली तहां बिभावना बिन कारण जहँ काज।
बिन तमोल अनमोल तव अधर अरुणाये आज ॥
दूजी तहां बिभावना अल्प कारण हुँ काज ।
पीताभर की बांसुरी ब्रज मोहत ब्रजराज ॥३४॥
तीजी होति बिभावना प्रतिबन्धकहु काज ।
घूंघटहू में श्याम को रूप न राखत लाज ॥३५॥
हेतुहीन कारज तहां चौथी मानो मित्र ।
कोकिल की बानी कहत यह कपोत अति चित्र
तहँ पांचईं बिभावना हेतुबिरोधी काज।
बंसी मन्द बजाइ चित चपल कियो ब्रजराज ॥
छठईं कारज सों जहां कारण होत उदोत ।
हरिपद कञ्जन सों प्रगट सुरसरिता को सोत ॥

उल्लेख ।

एक अनेक अनेक मत तहां प्रथम उल्लेष ।
हरि हरिजन, युवतीमदन, मेदिनि जानतशेष ॥
बिषय भेद तें दुतिय उल्लेष गुणनि को गोरि ।
रमा रमै को है, छमा छमिबे को पिय खोरि ॥

स्मृति ।

स्मृति देखि सादृश्य के देखि को सुधि होय ।
लखि तमाल नंदलाल सुधि आये आवति रोय ॥

भ्रान्ति ।

भ्रान्तिमान जहँ और में और वस्तु को ज्ञान ।
मो मुखचन्द विलोकि कै यह चकोर ललचान ॥

सन्देह ।

निश्चय होय न एक पर तहँ संदेह बखानि ।
बाल,मसाल,किबिज्जुयह जात कछू नहिं जानि

शुद्धापन्हुति ।

शुद्धापन्हुति और आरोपन धर्महिं गोय ।
ये न उरोज सरोज हैं नाभीसर के दोय ॥४४॥

हेत्वापन्हुति ।

सोई उक्ति संयुक्त तहँ हेत्वापन्हुति जानि ।
सौधनशशिमुखछवि, न असि बरतमताबियमानि

पर्यस्तापन्हुति ।

पर्यस्तापन्हुति अवर ठौर अर्थ आरोप ।
वैन कमल हरिहियकमल जापर कमलहि चोप

भ्रान्तापन्हुति ।

भ्रान्तापन्हुति औरको जहँ संदेह निकन्द ।
दृगनि देत आनन्द यह, चन्द? नहीं नँदनन्द ४७

छेकापन्हुति ।

छेकापन्हुति कहत तहँ साँच छपै जीहि ठौर ।
हठकरि अधरनिकखोछत, नटनागर? नहिं भौंर

कैतवापन्हुति ।

कहत कैतवापन्हुतिहिं व्याज पदनि बुधि ऐन ।
तिय तेरी मुसक्यान मिस पाश पसारत मैन ॥

उत्प्रेक्षा ।

उत्प्रेक्षा संभावना बस्तु, हेतु, फल बीच ।
उक्तानुक्त बिषय बदत सिद्धासिद्ध निभीच ॥५०॥

(उक्तानुक्तबिषया बस्तूत्प्रेक्षा)

काम अग्नि कामिनि हिये कच मेचक जनु धूम ।
लटलटकतिमुखपर मनो शशि अकाश गहि तूम॥

(सिद्धासिद्धबिषया हेतूत्प्रेक्षा)

तो गति लखि करि लाज गजराज मनो रज लाव
बसि बिसिनी की गोद निशि परयो भौंर अंग साव

(सिद्धासिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा)

तिय तुव मुखछबि को मनो करत कमल जलसैन

तुवबोलनिलगिकरततपपिकबनबसिबिनुचैन ॥

(गुप्तोत्प्रेक्षा)

उत्प्रेक्षा व्यञ्जक बिना गुप्तोत्प्रेक्षा सोउ ।

न्हात गात लपटात पट गुनि बियोग गहि रोउ॥

रूपकातिशयोक्ति ।

रूपकातिशयउक्ति जहँ उपमाही सों बोध ।

दामिनि दमक मयङ्क में लाल लखो यहि सौध*

(सापन्हुति)

ताहि कहत सापन्हवाऽपन्हुति लीन्हे होय ।

सुरगन सोधत सिन्धु तू हरि राखि हिय गोय ॥

भेदकातिशयोक्ति ।

भेदकातिशयउक्ति जहँ 'औरै' यह पद देत ।

श्याम सौंरई औरई चाहत चित हरि लेत ॥

सम्बन्धातिशयोक्ति ।

सम्बन्धातिशयोक्ति तहँ जहँ अयोग में योग ।

नन्द(१)गोद गहि चन्द को पाणि पसारत लोग॥

---

* अटारी (१) नन्द = बालक ।

योगहु बिषैं अयोग जहँ दूजो भेद गनाइ ।
तू मोहन के उरबसी नहिं उरबसी सुहाइ॥५८॥

अक्रमातिशयोक्ति ।

अक्रमातिशयउक्ति जहँ कारज कारण साथ ।
हाथ दिखावत बाल वह कियो लाल-मन हाथ ॥

चपलातिशयोक्ति ।

तहँ चपलातिशयोक्ति जहँ कारज हेतुप्रसङ्ग ।
चाले की चरचा चलत आँगि अमाति न अङ्ग ॥

अत्यन्तातिशयोक्ति ।

अत्यन्तातिशयोक्ति जहँ कारण आदिहि काज ।
पहिलेहो पूजी गरज पुनि गरज्यो गजराज॥६२॥

तुल्ययोगिता ।

तुल्ययोगिता वर्ण्य म धर्म एक जहँ जाग ।
तो के उर बाढ़त उरज पी के उर अनुराग ॥
दूजी जहाँ अवर्ण्य में एकै धर्म दिखात ।
तुव मुख लखि अरबिन्द अरु चन्दमन्द परिजात
तीजी जहँ हित अहित हूं होय बराबर चाल ।
तू.गड़ि रही गुपाल उर सौतिनहूं के बाल ॥

तुल्ययोगिता चतुर्थी गुनवन्तन को साथ ।
दन्द हरत नँदनन्द, घन, चन्दन, चन्द, सुपाथ ॥

दीपक।

दीपक बर्ण्य अबर्ण्य को धर्म एक जहँ होत ।
दीपक सों सोहत सदन, कुलदीपक सों गोत ॥

(शब्दावृत्ति)

शब्दावृति दीपक कहत अर्थ और पद सोइ ।
का जर सौति न होतिहै? तो दृग काजर जोइ॥

(अर्थावृत्ति)

अर्थावृति दीपक कहत अर्थ वहै पद और ।
वा बन कूजत कोकिला गुंजत माते भौंर॥६८॥

(उभयावृत्ति)

शब्दार्थावृति दीपकहिं कहत कबिन यहि चाल।
मन ते कढ़ति न लाल छबि बन तें कढ़ति न बाल

प्रतिबस्तूपमा।

बिबि में प्रतिबस्तूपमा धर्म एक पद सो न ।
नखतनिसोजगमगतजगमुकुतनिसुमुखसलोन ॥

दृष्टान्त।

तहँ दृष्टान्त सुमति बदत जहँ प्रतिबिम्ब दिखाहि।
नाह न छाड़ति भावती छाँह न छन बिलगाहि ॥

निदर्शना ।

निदर्शना बिबि वाक्य को इकता को आरोप ।
सोई सोन सुगन्ध जो सुखदायक बिन कोप ७३
अर्थान्विति सो दूसरो निदर्शना बुधि ऐन ।
खञ्जन की शोभा धरत अंजन रंजित नैन ७४
तहँ तीसरी निदर्शना असत सूचि कछु काँधि।
प्रगट करति कटि षीन ह्वै ऐसी दुसह दुसाँधि
चौथौ होति निदर्शना सदरथ सूचन पाइ ।
बड़ सेवत शोभा बडी काजर देत जनाइ ७६

व्यतिरेक ।

उपमा अरु उपमेय महँ जहँ बिशेष व्यतिरेक ।
कुचनसरिसकरिकहतसब श्रीफल सुखदबितेक

सहोक्ति ।

सो सहोक्ति सहभाव जहँ सुनतसुजनमनलाग ।
गई लरिकई ललो तुव लैसँग सौति-सुहाग ७८

बिनोक्ति ।

तहँबिनोक्ति जहँप्रस्तुतहिं कहत कछू बिनहीन
सरल सुभाव बिना कहूं छबि पावत न प्रवीन॥

तहँ दूजी जहँ कछू बिन कहत कछू रमनीय ।
घाम बिना घनकुंज वह दरशत दुख दमनीय ॥

समासोक्ति ।

समासोक्ति प्रस्तुत कहत अप्रस्तुत झलकात ।
निशनलिनीबसिदिवसअलि अलिनीढिगसकुचात

परिकर ।

परिकर कहत जहां अभिप्राय बिशेषण माहिं ।
नेक निहारत हिये तें गिरधर डोलत नाहिं८२

परिकरांकुर ।

साभिप्राय बिशेष्य यह परिकर अङ्कुर ढङ्ग ।
काज, लाज, पतिव्रत करत तीनो भङ्ग त्रिभङ्ग।

श्लेष ।

भाषत सुमति श्लेष तहँ जहँ बहु अर्थ सँयोग ।
श्याम स्वरूप सनेह मय दृगनि बसैबे योग ८४

अप्रस्तुतप्रशंसा ।

अप्रस्तुतप्रशंस जहं प्रस्तुत गर्भित होय ।
बिहरत बनितन सङ्गशिषि! तोसमसुखी न कोय

प्रस्तुताङ्कुर ।

प्रस्तुत सों प्रस्तुत जगत प्रस्तुत अङ्कुर जानि ।
शीतल करति महीतलहिं तू धन जीवनदानि ॥

पर्यायोक्ति ।

पहिली पर्यायोक्ति जहँ रचना संयुत बात ।
चौंकि उठति उर लाल के बाल खरखरत पात ॥
दूजी पर्यायोक्ति जहँ मिस सो कीजै काम ।
सुखदायिनि बेनी गुहत नाइनि बनि घनश्याम ॥

व्याजस्तुति ।

व्याजस्तुति निन्दाकरत जेहिथल होत बखान ।
देत ऊंच पद नीचहूं हो हरि कौन सयान ॥८६॥
स्तुति कीन्हे निन्दा प्रगट व्याजस्तुति है औरि ।
कीर्ति पतिब्रता कृपिन की नाहीं नांघति पौरि ॥

व्याजनिन्दा ।

निन्दा तें निन्दा कढ़त निन्दाव्याज सुधीर ।
जाई जाति अहीर की नहिं जानति परपीर ॥

बिशेषोक्ति ।

बिशेषोक्ति कारण प्रबल तऊ काज उपजै न ।
तिय तुवमुखपानिपपियत तऊलपत नहिं नैन ॥

असम्भव ।

कहत असम्भव सुमति तहँ जहां न सम्भवलाग ।
को जानत तो छोहरे नाथि निकरिहै नाग ९२

असङ्गति ।

कहत असङ्गति प्रथम जहँ हेतु, काज नहिंसङ्ग ।
करे दवानल पान हरि जरे जमन की अङ्ग ॥९४॥
किये असंगति दूसरी और ठौर को काम ।
जनकनन्दिनी के विरह रुखनि भेंटे राम ॥९५॥
तहां असङ्गति तीसरी करत काज प्रतिकूल ।
तू आई बर पूजने बरहिय कीन्हे शूल ॥ ९६ ॥

बिषम ।

कारण काज न एक रंग बिषम कहै बुधभाषि ।
राखति मूरति सांवरी होति ऊजरी आंखि॥९७॥
अनमिल सँगसों बुध कहत दूजो बिषम बिचार।
कहां निपट कटिषीन यह कहँ ये उरजउदार ॥
होय बुरो फल भल करत तीजो बिषम बखानि ।
सुखको कियोसनेह अलि उपजीअधिकगलानि ॥

सम ।

समस्वरूप बरणत जहाँ तहाँ प्रथमसम जानि ।
छैल छबीलो लाल ज्यों तैसीतिय छबि खानि ॥
हेतु काज समरूप जहँ दूजो समकहु वोहि ।
चितसँताप करिबो उचित तरणि-तनूजा तोहि ॥

उद्यमसिद्ध अनिष्ट बिन सम दूसरो गनाइ ।
हौं आई हठ मेटनेे तूं हठ दियो मिटाइ १०२

बिचित्र ।

तहँ बिचित्र बिपरीत फल की रुचि रचैउपाय।
सबसों ऊंची होन को बैठी नार नवाय॥१०३॥

अधिक ।

अधिक, अधिक आधारसों आधेयौ अधिकाइ ।
सात पताल समुद्रहू हरि कीरति न समाइ ॥
दूजो अधिक अधेय सों जब अधार अधिकाइ ।
जाहरिहिय सब जग सु तू राख्यो हिये बसाइ ॥

अल्प ।

अल्प, अल्प आधेय तें जहाँ अल्प आधार ।
छला छिगुनियाको लला अबकर करत बिहार ॥

अन्योन्य ।

उपकारनि की परसपर अन्योन्यालङ्कार ।
सोहतहीतल हारसों हीसों सोहत हार॥१०७॥

बिशेष ।

तहँ बिशेष आधेय जहँ बरनत बिन आधार ।
मोहन मधुपुर ह्व गये गुन मनमोहनहार १०८

तहाँ द्वितीय बिशेष जहँ एक अनेकन ठौर ।
उर,बाहिर, चहुंदिस दृगनि देखति नन्दकिशोर॥
तहँ तीसरी बिशेष लहि थोरो कहत बिशाल ।
तिय तो रूपलखि लख्यो रति को रूप रसाल ॥

व्याघात ।

जाहिक्रिया भलहोत तेहिं अनभलतहँ व्याघात ।
भावतिपतिहिं स्वभावतेहि सौतिहियो फटिजात
क्रिया बिरोधिन काज को करताहू तें नीक ।
सज न सिंगारतज करति सौतिसिंगारन फीक॥

कारणमाला ।

कारणमाला हैतु औ काज गुहै इकताग ।
जीवनसों छबि छबिसों पिय-राग रागसों भाग ॥

एकावली ।

गहितजि, गहितजि,अर्थ अहँतहँ एकावलिमानि
लाल डोठिबेनी लगी बेनी लगी छवानि ११४

मालादीपक ।

दीपक एकावलि मिले मालादीप प्रकास, ।
कुचनीबी हियहिये पियपिय में छबिको बास ॥

सार ।

उत्तर उत्तर उतकरष अलङ्कार तहँ सार ।
सिरिसि-सुमन सों मारमृदु तासों नन्दकुमार ॥

यथासंख्य ।

यथासङ्ख्य क्रमसों अरथ जहां पदन को होत ।
नैन, बैन, प्यारौबदन; चञ्चल, मृदुल, उदोत ११७

पर्याय ।

एक अनेकन में कहै अलङ्कार पर्याय ।
बसि रतिहूं उर बसिहुं छबितो तनरही समाय
एकहि बिषैं अनेक जहँ तहँ दूजी पर्याय ।
तबतोछबिहरिहिय बसति अबतूबसति बनाय ॥

परिवृति ।

घटितेंबढि, बढितें कि घटिपलट परीवृतिनाम।
नँदनन्दन तन्दुल लये दये कनक के धाम ॥

परिसख्या।

परिसंख्या उहिठौर नहिं ठौर यही असहोत ।
सूखतसरनितरनिकिरनितियमुखअम्बुउदोत ॥

विकल्प ।

बिबिबिरुद्धसम बलजहां तहँबिकल्प बुधभाषु ।
गजगौनी उर में कितो गजरचक्र धरि राखु ॥

समुच्चय ।

बहु बातैं इक संग जहँ तहाँ समुच्चय जानि ।
लखिलालहिं हुलसी हंसीभ्रमी सकुचिललचानि॥

एक काज को हेतु बहु कहत समुच्चय ताहु ।
चितवनि बोलनिहँसनि तुवकारतिनाहउरचाहु॥

कारकदीपक ।

बातकहत क्रमसों जहां जानहु कारकदीप ।
दरस दिये तो आइये बैठियलाल समीप १२५

प्रत्यनीक ।

प्रत्यनीक प्रतिपच्छ की पराकरम की बैन ।
तूं जीती रति तेहि अकस उन्हैं सतावत मैन ॥

समाधि ।

तहँ समाधि जहँ औरई हेतु बहाने काज ।
सास दही बेंचन कही रही चहत ब्रजराज १२७

काव्यार्थापत्ति ।

काव्यार्थापति अलङ्कृति जौं तौं जहाँ लखात ।
हारो रति तुव रूप लखि नारिन की का बात

काव्यलिंग ।

अर्थ समर्थत युक्ति सों काव्यलिङ्ग कहि तौन ।
तिय ती ठोढ़ी गाड़ तें मोमन काढ़त कौन ॥

प्रौढ़ोक्ति ।

प्रौढ़ोकति उत्कर्ष को हेतु और जब होत ।
शरदपुनी को शशि सरिस ती को बदन उदोत

सम्भावना ।

जो यों होय तो होय यों सम्भावना स्वरूप ।
जो सारद आपुहि कहै कहै तो राधा रूप १३१

मिथ्याध्यवसित ।

मिथ्याध्यवसित झूठ को जहँ पोषत कहि झूठ ।
कामिन को नितही रहत बिन कामिन मन तूठ

ललित ।

ललित कहत तेहि बातमें ताकी छाँह दिखाति
लाल बाल चाहत कहूं पर बिन चिड़ी उड़ाति

प्रहर्षण ।

प्रथम प्रहर्षण जतन बिन बांछितफल जब होय
चित चाहतं हरि राधिकाहिं औचक आई सोय
मिले, प्रहर्षण दूसरो, बांछित फल सों बाढ़ि ।
लखन नवेलिहिं गये हरि हुती अकेलिहि ठाढ़ि
करत उपाय उपाय को लाभ प्रहर्षण और ।
गौनी दूती गेह तिय निरख्यो नन्दकिशोर १३६

बिषादन ।

कहत बिषादन ठौर जेहि अभिलाषित उपजै न
उरलावन भावन चहत तौलौं रही न रैन॥३७

गुणवत ।

गुणवत गुरुवाई लहै ओछो आछे संग ।
हरि हू निज हिय धरी रज द्विजबर पायप्रसंग॥

उल्लास ।

पर गुण दूषण सौं परहि गुण दूषण उल्लास ।
बालबदनतुवबिधुलखत निज निर्मल छबि आस
बरबस खेलत फाग हरि जुवतिन्ह लागत दाग
मुरली मधुर बजाइ हरि तोरत पतिब्रत ताग॥
तू न चलति तजि मान तो उहि थान को अभाग।
लाभ चवाइन में बसें जो न लगै अँग दाग ॥

अवज्ञा ।

तहँा अवज्ञा पर गुणनि जहँ न लहै गुण ठाट।
रतनाकरहू के निकट लागति हाथ बराट ॥
जहँ परदोष न दोष लह तहँा अवज्ञा औरि ।
जो जरि जात जवास तो जलद न की कछु खोरि॥

अनुज्ञा ।

कहत अनुज्ञा दोष जहँ चहत कछू गुण देखि ।
चावै प्रलयपयोधि पुनि हरषिय हरिहिं निरेषि ॥

लेश ।

गुण में दोष कि दोष में गुण कल्पन तहँ लेश ।
रूप कियो बदनाम तोहि रमती किती हमेश ॥

मुद्रा ।

प्रकृतारथ पर पदन सों सूचन मुद्रा सोय ।
गोल कपोल बिशाल भुज बड़े २ दृग दोय १४६

रत्नावली ।

क्रमिकनि को क्रम सों कथन रत्नावली अमोल ।
सत स्वरूप रज भरे तम रँग अँग आँगन डोल ॥

तद्गुण ।

तहँ तद्गुण गुण आपनो तजि सङ्गति गुण लेहिं ।
बेसर मुकुता अधर सँग अरुण दिखाई देहिं ॥

पूर्वरूप ।

बहुरि आपनो गुण गहत पूरबरूप बखानि ।
अधर अरुणाई मुकुत की मेटो मृदु मुसक्यानि ॥

अनुवर्तन गुन की जहाँ पूर्वरूप तहँ और ।
बिन जोन्हहु मुसक्यानि मृदु कीन्हो कुञ्ज अँजोर॥

अतद्गुण ।

कहत अतद्गुण संगहू सङ्गति रङ्ग न लाग ।
रहति साँवरे उर सदा नेसुक गहति न राग ॥

अनुगुण ।

अनुगुण गुण उत्कर्ष जहँ समगुण सँग लहि होत।
नागबेलि रस लहि अधर दूने भयें उदोत॥१५२॥

मीलित ।

मीलित मिलत स्वरूप सम भेद परै न लखाइ।
जुवति जुन्हाई में मिली हारि हरि ठहराइ१५३

सामान्य ।

भेद न जहँ सादृश्य में सामान्यालङ्कार ।
हेरत हरिहिं तमाल बन हारि रही हिय दार॥

उन्मीलित ।

उन्मीलित सादृश्य में भेद जहाँ बिलगाइ ।
जुवति जुन्हाई में मिली बेनी दई बताइ॥१५५॥

विशेषक ।

समुझि परत सादृश्य में भेद विशेषक जान ।
लाल तमालन हू लखि पीताम्बर पहिचान१५६

गूढ़ोत्तर ।

गूढ़ोत्तर भाषत जहाँ उत्तर आशयवार ।
भटको पथिक न पाथ लखि बटकी निकट उतार॥

चित्र ।

प्रश्नहि में उत्तर जहाँ तहँ चित्रालङ्कार ।
का-काली का मधु-रहै को-बिद जन संसार१५८
चित्र दूसरो प्रश्न को उत्तर उत्तर देत ।
को हित जोरत नीति को मो हित अजस जु लेत॥

सूक्ष्म ।

सूक्ष्म पर आशय समुझि जहाँ करत कछु सैन।
हरि हिय केसर हेरि तिय अञ्जन लाये नैन ॥

पिहित ।

करि उपाय जाहिर करत पिहित पराई बात।
प्रिया दिखाई दर्पणी प्रीतम आये प्रात॥१६१॥

व्याजोक्ति ।

व्याजोकति गोपित करै रूप हेतु की ओट ।
प्रात न जैहीं कुसुम को लागी गात खरोट ॥

गूढ़ोक्ति ।

गूढ़ोकति कहि और सों औरिहिं देहि जनाइ।
भौंर भाजु तज पद्मिनी नाथ रह्यो नियराइ ॥

विवृतोक्ति ।

विवृतोकति जो श्लेष सों गोप सु कियें उघार ।
रागी बास-न राखि कहि कही बिदा करु जार॥

युक्ति ।

युक्ति दुरावत क्रिया सों मरम और की त्रास ।
लिखतहुतीहरिहरलिख्योलखिपरीसिनिहिंपास॥

लोकोक्ति ।

लोकोकति तहँ लोक की कहनावति जहँ होय ।
ऐसी चहति न तुम्हें हरि परषत बीजहिं बोय॥

बक्रोक्ति ।

बक्रोकति कल्पत अरथ औरहि काकु श्लेष ।
धूम मचावत सूधि गुनि धूम पावकहिं पेख ॥

स्वभावोक्ति ।

स्वभावोक्ति भाषत सुमति भाषत सहज स्वभाव ।
खांचत ख्याल अनेक हरि नाचत चञ्चल पांव॥

भाविक ।

तहाँ प्रथम भाविक भई बात प्रगट जेहि ठौर।
अँखियन पर नाचत लख्यो नाचत नन्दकिशोर॥

तहँ दूजो भाविक जहाँ भाविक प्रगट दिखात।
तोसों सुनति बखान सखि देखति सामल गात॥

उदात्त ।

तहँ उदात्त बरनत जहाँ सम्पति को अधिकार।
मणि मुकुतन के नन्दगृह लागे बन्दनवार १७१
जहँ सलाघ्य उपलच्छणी दूजो तहाँ उदात ।
हरि राधा कुञ्जन रमे सो सब पूजन जात १७२

अत्युक्ति ।

तहँ अत्युक्ति कहत जहाँ कछू बखानत ढेर ।
जनक जानकी व्याह में जाचक करे कुबेर १७३

निरुक्ति ।

तहँ निरुक्ति भाषत अरथ औरै नाम बिचार ।
मारत बिरहिनि हेरि यहि हैत कहावत मार॥

प्रतिषेध ।

जहँ प्रसिद्ध प्रतिषेध प्रतिषेध सो मानहु मित्त।
चित्त गड़े बिन स्वाद कहँ नहिं शुक पाठ कवित्त॥

बिधि ।

तहँबिधिजहँसिधिबातकोकहिबिधानअनुरागि।
मुरली मुरली होति है मोहन के मुख लागि॥

हेतु ।

प्रथम हेतु जहँ हेतु औ हेतुमान इक ठौर ।
मान न रहिहै मानिनी घिरि आये घनघोर ॥
हेतु हेतुमानहिं कहत एक स्वरूप दुतीय ।
पियमन सुख तुव ध्यान पियमन दुखमान सुतीय॥
तीजो हेतु असामरथ अर्थ समर्थित होय ।
पिय प्यारी एकत रहत कहिबेही को दोय१७६

इति श्रीमन्महाराजद्विजराजकाशिराज उदितनारायण-नरेन्द्रानुज-देवद्रुमावतार श्रीदीपनारायणसिंहकारिते कवि ब्रह्मदत्तकृते दीपप्रकाशे चतुर्थः प्रकाशः ।

—***—

अथ दूषण ।

कर्णकटु ।

कहत कर्णकटु ताहि जो सुनत न श्रवण सुहाय ।
भृकुटी बिकट कमान करबान कटाच्छनि घाय॥

अवाचक ।

कहत अवाचक कहत जेहि ता बाचक पद सो न ।
पय पयोधरन को दयो गुन पयोद को कौन ॥

निहितार्थ ।

तहँ निहितार्थ प्रसिद्ध कहु अप्रसिद्ध को चाहि ।
सोर करति रसना नहीं भागहिं रही सराहि ॥

अप्रतीत ।

संज्ञाहीन कहै कहत अप्रतीति मतिमन्त ।
दुतिया के शशि सो दुवो द्विपआनन‡ के दन्त॥

अनुचितार्थ ।

सो ऽनुचितारथ अभिलषित जो पद अर्थ बिगार ।
जोहत नन्दकुमार मग तू इत करत गुहार॥५॥

नेयार्थ ।

रूढ़ पदनि बिनु लाच्छनिक नेयारथ निरधारि ।
सकुचत श्री को सदन तुव नीको बदन निहारि॥

अप्रयुक्त ।

अप्रयुक्त है कोष में भाषा भाषी नाहिं ।
ग्लौ*गलानियुत होत है तिय तेरो मुख चाहि ॥

श्लील ।

सो सलील भाषत परत जहँ निन्दित पद आनि ।
बार बार बरजत बुरी तुम न बिसारति बानि ॥

‡ गणेश जी । * ग्लौ = चन्द्रमा ।

निरर्थ ।

तहँ निरर्थ जहँ पद धरत छन्द निबाहन काज ।
लाल तुम्हे बिन बाल को अनँग सतावत आज ॥

क्लिष्ट ।

गाढ़ो गथ सम अर्थ तहँ क्लिष्ट कहत बुधि ऐन ।
मित्रमित्रवाहन-बधू + लखि लजात तुव नैन ॥

ग्राम्य ।

ग्राम्य ग्राम भाषा कहत कहत सुमति की पाँति ।
जागतही गुरु लोग तू गवनी कवनी भाँति ॥

मतिबिरुद्ध ।

प्रकृतारथ बिपरीत तेहि मतिबिरुद्ध कृत नाम ।
अजसी सुरपुर जात हैं जसिन्ह जगत सुरधाम ॥

असमर्थ ।

शक्ति हीन पद तहाँ असमर्थ कहत मतिमन्त ।
आयो कन्त एकन्त अलि तू न करति क्यों तन्त ॥

पुनरुक्ति ।

जहँ भासत पुनरुक्ति तहँ पुनरुक्त्यवदाभास ।
प्यारो को प्यारो लगत प्यारी तेरो हास ॥१४॥

+ मृगी ।

तहँ भाषत पनुरुक्ति पुनरुक्ति परति पहिचानि।
पिगहिय को सुख देतितियतव बोलनि बतरानि॥
दूषण भाषि पंचदश पूरब कवि समुदाय ।
यातें कहे कहे बिना कैसे परै जनाय ॥ १६ ॥

अथ गुन।

ओज।

कहत ओज गुण तहाँ जहँ आषर होत उदण्ड।
मारतण्ड लौं तपत जग नृप तव तेज प्रचण्ड॥

कवित्त।

सङ्कुचित कीन्हो प्रतिपच्छिन तुषारन को संकुचित कपटी समूह कुमुदै कियो। जगर मगर भये नीति के डगर अरु अरि को पसार अन्धकारनि जुदै कियो॥ बिकसे सरोजनि से सुहृद समाज ब्रह्म चाकर चतुर चक्रबाकनि मुदै कियो। चण्डकर अतिहि उदण्ड नभमण्डल ज्यों उदितनरायण को ओज यों उदै कियो १८

प्रसाद—दोहा।

तहँ प्रसाद गुण कहत जहँ वर्ण बराबर होत ।
शारद बारद वारिये निरखि नृपति यश सोत॥

कवित्त ।

कुशल कलानि में करनिहार कीरति को कबि कोबिदन को कलपतरवर है। शील सनमान बुधि विद्या को निधान ब्रह्म मति मान हँसन को मानसरवर है ॥ दीपनारायण अवनीप को अनुज प्यारो दीन दुख देखत हरत हरबर है । गांहक गुनी को निरबाहक दुनी को नीको ग़नी गजबकस गरीबपरवर है॥२०॥

माधुर्य—दोहा ।

गुण माधुर्य जहँा धरत मीठे आषर आनि ।
नन्दनन्द की मन हरति मन्दमन्द मुसक्यानि ॥

सवैया ।

कोऊ कहूं करै दान बिधाननि कोऊ तो बेद पुराणनि बाँचै । कोऊ कहूं गहै संयम नेम औ कोऊ कहूं सहै शीत औ आँचै ॥ साँचै पुकारि कहै कबि ब्रह्म मैं जानत आन कछू न छ पाँचै । वा अवधेश के छोहरे की छबि मेरी तो आंखिन ऊपर नाचै ॥ २२ ॥

दोहा ।

समुझि हिये हरिवंशजग विदित उदित अवनीप ।
मुदित करन लगि यह कियो प्रगट पञ्चशिष दीप ॥

श्लोक ।

प्रकाशयत्याशु यथा प्रकाशो दीपस्य दृष्टोऽखिलवस्तुवृदं । प्रकाशितो दीपनरायणेन (१) "दीपप्रकाशे" त्यभिधानमस्य ॥

दोहा।

मुनिरसबसुशशि (२) बरषनभमासचतुर्थीस्वेत ।
जषिनी में निजकर लिख्यो ब्रह्मदत्त निज हेत ‡

इति श्रीमन्महाराजद्विजराजकाशिराज उदितनारायण-नरेन्द्रानुज-देवद्रुमावतार श्रीदीपनारायणसिंहकारिते कवि ब्रह्मदत्तकृते दीपप्रकाशे पञ्चमः प्रकाशः ।

समाप्तो दीपप्रकाशः ।

---

(१) अपि माषं मषं कुर्य्याच्छन्दोभङ्गं न कारयेदित्यनुक्तं कविनाच ।

(२) सम्वत् १८६७ ।

‡ यह दोहा पुस्तक रचने का समय नहीं बतलाकर प्रति (कापी) लिखने का समय कहता हो तो आश्चर्य नहीं । पर जैसा था वैसाही मैंने रहने दिया ।